जीवन ग्रन्थमाला का १६ वां पुष्प

नन्दीसूत्र मूलपाठ

प्रकाशक

छोटेलाल यति

जीवन कार्यालय अजमेर

(तार घर के पीछे) अजमेर

सन् १९३५.] ❀ [मूल्य =)

शीघ्रता कीजिये ? अपूर्व अवसर ?? हाथ से न जाय

पूज्य श्री १००८ श्री जवाहिरलालजी महाराज के व्याख्या
द्वारा जो पुस्तकें निकलती हैं:—

उनके पढ़ने से देश, जाति, नीति और जैन के गूढ़ रहस्यों के साथ
परोपकार वृत्ति का प्रसार होता हैं तथा जैसे-जैसे इन दैवी गुणों की
सत्ता बढ़ती जायगी वैसे वैसे संसार की पीड़ारूप आसुरी
भाव का मूलोच्छेद होता जायगा।

यदि आप ऐसे २ अनेक ग्रंथों को पढ़ना चाहते हों तो आज
जीवन कार्यालय अजमेर के स्थायी ग्राहक बनकर **एक रुपया** और ज़ा
जमा करा देंगे तो आपको यह पुस्तकें बुक पोस्ट द्वारा बराबर मि
जाँयगी और इससे खर्च की भी बचत होगी तथा समय पर पुस्तकें
मिलेंगी रुपया पूरा होने पर हिसाब भेज दिया जायगा।

आज तक दयादान सम्बन्धी अपूर्व तर्क वितर्कों सेपरिपूर्ण
ऐसी पुस्तकें जैन समाज में प्रकाशित नहीं हुई हैं।

तेरापंथ समाज ने इन पुस्तकों को बीकानेर गवर्नमेंट से जब्त करा
के लिये दो दो बार तन, मन, धन, से महान प्रयत्न किया किन्तु दया-धर्म
प्रेमी सरकार ने दया-धर्म के सिद्धान्तों की पूर्ण रक्षा की है।

"सद्धर्म मंडन" (१२०० पृष्ट के अंदाज का ग्रंथ रु० १) में।
"चित्रमय अनुकम्पा विचार" (जिसमें दयादान सम्बन्धी २०
चित्र रहेंगे) इसका मूल्य केवल आठ आने।

यह पुस्तकें छपने से पहले ही इस मूल्य में मिल सकेंगी बाद में
नहीं दी जाँयगी इस लिये अभी से अपना और अपने
मित्रों का नाम ग्राहकों की श्रेणी में लिखा दें।

नथमल लूणियाद्वारा आदर्श प्रेस अजमेर में छपी

॥ श्रीमद्देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणप्रणीत ॥

श्री नन्दीसूत्र मूलपाठः ।

जयइ जग जीव जोणी वियाणओ। जगगुरू जगाणंदो।
जगणाहो जगबंधू । जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥१॥
जयइ सुआणं पभवो । तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ ॥
जयइ गुरूलोगाणं। जयइ महप्पा महावीरो ॥२॥
भद्दं सव्वं जगुज्जोयगस्स । भद्दं जिणस्स वीरस्स ॥
भद्दं सुरासुरनमंसियस्स । भद्दं धुयरयस्स ॥३॥
गुण भवणगहण। सुयरयण भरिय दंसणवि सुद्धरत्थागा
संघ नगर भद्दं ते। अखंड चारित्तपागारा ॥४॥
संजम तव तुंबारयस्स । नमो सम्मत्त पारियल्लस्स ॥
अप्पडिचक्कस्स जओ होउ सया संघचक्कस्स ॥५॥
भद्दं सील पडागूसियस्स। तव नियम तुरय जुत्तस्स ॥
संघरहस्स भगवओ । सज्झाय सुनंदिघोसस्स ॥६॥

कम्मरय जल्लोह विणिग्गयस्स। सुयरयणदीह नालस्स।
पंच महव्वय थिरकन्नियस्स। गुणकेसरालस्स ॥७॥
सावग जण महुअरि परिवुडस्स। जिण सूर तेय बुद्धस्स।
संघपउमस्स भद्दं। समण गण सहस्स पत्तस्स ॥८॥
तव संजम मयलंछण। अकिरिय राहुमुह दुद्धरिसनिच्चं।
जय संघ चंद। निम्मल सम्मत्त विसुद्ध जोण्हागा ॥९॥
पर तित्थिय गह पह नासगस्स। तवतेय दित्त लेसस्स।
नाण ज्जोयस्स जए भद्दं दम संघ सूरस्स ॥१०॥
भद्दं धिइ वेला परिगयस्स। सज्झाय जोग मगरस्स ॥
अक्खोहस्स भगवओ। संघ समुद्दस्स रुंदस्स ॥११॥
सम्म दंसण वर वइर दढ रूढ गाढावगाढ पेढस्स ॥
धम्म वररयण मंडिय चामीयर मेहलागस्स ॥१२॥
निय मूसिय कणय सिलायलुज्जल जलंत चित्तकूडस्स॥
नंदण वण मणहर सुरभि सील गंधुद्धुमायस्स ॥१३॥
जीवदया सुंदर कंद रुइरिय मुणिवर मइंद इन्नस्स ॥
हेउ सय धाउ पगलंत रयणदित्तोसहि गुहस्स ॥१४॥
संवर वर जल पग लिय उज्झर पविराय माणहारस्स ॥
सावग जण पउर रवंत मोर नच्चंत कुहरस्स ॥१५॥
विणय नय पवर मुणिवर फुरंत विज्जुज्जलंत सिहरस्स।
विविह गुण कप्प रुक्खग फलभर कुसुमाउल
वणस्स ॥१६॥

नाण वर रयण दिप्पंत कंत वेरुलिय विमल चूलस्स ॥
वंदामि विणय पणओ संघ महामंदर गिरिस्स ।१७॥
गुण रयणुज्जल कडयं सील सुगंधि तव मंडिउद्देसं ॥
सुयवारसंगसिहरं संघ महामंदरं वंदे ॥१८॥
नगर रह चक्क पउमे चंदे सूरे समुद्द मेरुम्मि ॥
जो उवमिज्जइ सययं तं संघगुणायरं वंदे ॥१९॥
वंदे उसभं अजियं संभव मभिनंदण सुमइ सुप्पंभ
सुपासं ॥
ससि पुप्फदंत सीयल सिज्जंसं वासुपुज्जं च ॥२०॥
विमल मणंत य धम्मं सन्तिं कुंथुं अरं च मल्लिं च ॥
मुनिसुव्वय नमिनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥२१॥
पढमित्थ इंदभूइ बीए पुणहोइ अग्गिभूइत्ति ॥
तईए य वाउभूई तओ वियत्ते सुहम्मेय ॥२२॥
मंडिअ मोरिय पुत्ते अकंपिए चेव अयल भायाय ॥
मे यज्जेय पहासेय गणहरा हुंति वीरस्स ॥२३॥
निव्वुइ पह सासणयं जयइ सया सव्व भाव देसणयं ॥
कु समय मय नासणयं जिणिंदवर वीरसासणयं ॥२४॥
सुहम्मं अग्गिवेसाणं जंबुनामं च कासवं पभवं ॥
कच्चायणं वंदे वच्छं सिज्जंभवं तहा ॥२५॥
जसभद्दं तुंगियं वंदे संभूयं चेव माढरं ॥
भद्दबाहुं च पाइन्नं थूलभद्दं च गोयमं ॥२६॥

एलावच्चसगोत्तं वंदामि महागिरिं सुहत्थिं च ॥
तत्तो कोसियगोत्तं बहुलस्स सरिव्वयं वन्दे ॥२७॥
हारिय गुत्तं साइं च वंदिमो हारियं च सामज्जं ॥
वन्दे कोसिय गोत्तं संडिल्लं अज्ज जीयधरं ॥२८॥
तिसमुद्दखायकित्तिं दीव समुद्देसु गहिय पेयालं ॥
वंदे अज्ज समुद्दं अक्खुभिय समुद्दगंभीरं ॥२९॥
भणगं करगं झरगं पभावगं णाणदंसण गुणाणं ॥
वंदामि अज मंगुं सुय सागर पारगं धीरं ॥३०॥
वंदामि अज्ज धम्मं तत्तो वंदे य भद्द गुत्तं च ॥
तत्तोय अज्ज वइरं तव नियम गुणेहिं वइर समं ॥३१॥
वंदामि अज्ज रक्खिय खमणे रक्खिय चारित्त
सव्वस्से ॥
रयण करडंग भूओ अणुओगो रक्खिओ जेहिं ॥३२॥
नाणम्मि दंसण म्मिय तव विणए णिच्च काल मुज्जुत्तं ॥
अज्जं नंदिलखमणं सिरसा वंदे पसन्नमणं ॥३३॥
वड्ढउ वायगवंसो जसवंसो अज्ज नागहत्थीणं ॥
वागरण करण भंगिय कम्मप्पयडी पहाणाणं ॥३४॥
जच्चंजण धाउ समप्पहाण मुद्दिय कुवलय निहाणं ॥
वड्ढउ वायगवंसो रेवइनक्खत्त नामाणं ॥३५॥
अयलपुरा णिक्खंते कालियसुय आणुओगिए धीरे ॥
बंभद्दीवगसीहे वायगपय मुत्तमं पत्ते ॥३६॥

जेसिं इमो अणुओगो पयरइ अज्जावि अड्ढ भरहम्मि ॥
बहु नयर निग्गय जसे ते वंदे खंदिलायरिए ॥३७॥
तत्तो हिमवन्त महंत विक्कमे धिइ परक्कम मणंते ॥
सज्झाय मणंतधरे हिमवंते वंदिमो सिरसा ॥३८॥
कालिय सुय अणु ओगस्स धारए धारए य पुव्वाणं ॥
हिमवंत खमा समणे वंदे णागज्जुणायरिये ॥३९॥
मिउमद्दव संपन्ने आणुपुव्वि वायगत्तणं पत्ते ॥
ओहसुय समायारे नागज्जुण वायए वंदे ॥४०॥
गोविंदाणं पि नमो अणुओगे विउल धारिणिं दाणं ॥
णिच्चं खंति दयाणं परुवणे दुल्लभिं दाणं ॥४१॥
तत्तो य भूयदिन्नं निच्चं तव संजमे अनिव्विण्णं ॥
पंडिय जण सामण्णं वंदामो संजम विहिण्णु ॥४२॥
वरकणगतविय चंपग विमउलवर कमल गब्भ सरिवन्ने॥
भविय जणहिययदइए दयागुण विसारए धीरे ॥४३॥
अड्ढ भरहप्पहाणे बहुविह सज्झाय सुमुणिय पहाणे ।
अणुओगिय वर वसभे नाइल कुल वंसनंदिकरे ॥४४॥
भूयहियअपगब्भे वंदेऽहं भूयदिन्न आयरिए ॥
भवभय वुच्छेय करे सीसे नागज्जुण रिसीणं ॥४५॥
सुमुणिय निच्चा निच्चं सुमुणिय सुत्तत्थ धारयं वन्दे ॥
सब्भावुब्भावणया तत्थं लोहिच्चणामाणं ॥४६॥

अत्थ महत्थक्खाणिं सुसमण वक्खाण कहण ॥
निव्वाणिं ॥
पयईए महुरवाणिं पयओ पणमामि दूसगणिं ॥४७॥
तव नियम सच्च संजम विणयज्जव खंति मद्दवरयाणं ॥
सील गुणगद्दियाणं अणुओग जुगप्पहाणाणं ॥४८॥
सुकुमाल कोमल तले तेसिं पणमामि लक्खण पसत्थे
पाए पावयणीणं पडिच्छ सय एहि पणि वइए ॥४९॥
जे अन्ने भगवन्ते कालिय सुय आणु ओगिए धीरे ॥
ते पणमिऊण सिरसा नाणस्स परूवणं वोच्छं ॥५०॥*

इति ।

सेल[१]-घण, कुडग[२], चालणि[३], परिपूणग[४], हंस[५], महिस[६],
मेसे[७] य, मसग[८], जलूग[९], बिराली[१०], जाहग[११], गो[१२], भेरी[१३]
आभीरी[१४] ॥५१॥

"सा समासओ तिविहा पन्नत्ता तंजहा जाणिया, अजाणिया, दुव्वियड्ढा" जाणिया जहा खीरमिव, जहा हंसा जे घुट्टन्ति इह गुरुगुण समिद्धा दोसे य विवज्जंति तं जाणसु जाणियं परिसं ॥५२॥ अजाणिया जहा–जा होइ पगइमहुरा मियछावय सीह कुक्कुडय भूआ। रयणमिव असंठविया। अजाणिया साभवे परिसा ॥५३॥ दुव्वियड्ढा जहा–नय कत्थइ निम्माओ न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेणं। वत्थिव्व वायपुण्णो फुट्टइ गामिल्लयवियड्ढो दुव्वियडढो ॥५४॥ (सूत्र) नाणं पञ्चविहं पन्नतं, तंजहा–आभिणि बोहियनाणं सुयनाणं, ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं, केवलनाणं॥ १ ॥ तं समासओ दुविहं पण्णतं, तंजहा–पच्चक्खं च परोक्खं च ॥ सू० २ ॥ से किं तं पच्चक्खं? पच्चक्खं दुविहंपण्णत्तं, तंजहा इंदियपच्चक्खं। नोइंदियपच्चक्खं च ॥ सू० ३ ॥ से किं तं इंदिय पच्चक्खं? इंदियपच्चक्खं पञ्चविहं पण्णत्तं, तंजहा–सो इंदियपच्चक्खं। चक्खिंदिय पच्चक्खं। घाणिंदिय पच्चक्खं। जिब्भिंदिय पच्चक्खं। फासिंदिय पच्चक्खं। सेतं इंदियपच्चक्खं ॥ सू० ४ ॥ से किं तं नोइंदियपच्चक्खं? नोइंदियपच्चक्खं तिविहं पण्णत्तं तंजहा–ओहिनाण पच्चक्खं। मणपज्जवनाण पच्चक्खं। केवलनाण

पच्चक्खं ॥५॥ से किं तं ओहिनाण पच्चक्खं ? ओहिनाण पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा–भवपच्चइयंच खा ओवसमियं च ॥ ६ ॥ से किं तं भवपच्चइयं ? भवपच्चइयं दुण्हं, तंजहा—देवाणय नेरइयाणय ॥ ७ ॥ से किं तं खा ओवसमियं ? खा ओवसमयं दुण्हं, तंजहा—मणूसाण य पंचेंदिय तिरिक्ख जोणियाण य। को हेऊ खाओवसमियं ? खाओवसमियं तयावरणि ज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिनाणं समुपज्जइ ॥ सू० ८ ॥ अहवा गुणपडिवन्नस्स अणगारस्स ओहिनाणं समुपज्जइ तं समासओ छव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-आणुगामियं[१], अणाणुगामियं[२] वड्ढमाणयं[३], हीयमाणयं[४], पडिवाइयं[५], अपडिवाइयं[६], ॥ ९ ॥ से किं तं आणुगामियं आणुगामियं ओहिनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा–अंतगयं च मज्झगयं च। से किं तं अंतगयं ? अंतगयं तिविहं पण्णत्तं तंजहा पुरओ अंतगयं ? मग्गओ अंतगयं। पासओ अंतगयं से किं तं पुरओ अंतगयं ? पुरओ अंतगयं–से जहा नामए केइ पुरिसे उक्कवा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा पुरओ काउं पणुल्लेमाणे २ गच्छेज्जा, से तं पुरओ अंतगयं। से किं तं मग्गओ

अंतगयं ? मग्गओ अंतगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे २ गच्छिज्जा, से तं अंतगयं । से किं तं पासओ अंतगयं ? पासओ अंतगयं सेजहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा पासओ काउं परिकड्ढे माणे २ गच्छिज्जा, से तं पासओ अंतगयं से तं अंतगयं । से किंतं मज्झगयं ? मज्झगयं से जहा नामए केइ पुरसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा मत्थए काउं समुव्वह माणे २ गच्छिज्जा सेतं मज्झगयं । अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो । पुरओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पुरओ चेव संखिज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ मग्गओ अंतगएणं ओहिनाणेणं मग्गओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । पासओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पासओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । मज्झगएणं ओहिनाणेणं सव्वओ समंता संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । से तं आणुगामियं ओहिनाणं ॥ १० ॥ से किं तं अणाणुगामियं ओहिनाणं

अणाणु गामियं ओहिनाणं से जहानामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरं तेहिं परिपेरंतेहिं, परिघोले माणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं पासइ, अन्नत्थगए न जाणइ न पासइ एवामेव अणाणुगामियं ओहिनाणं जत्थेव समुप्पजज्इ तत्थेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ; अन्नत्थगएण पासइ, से त्तं अणाणुगामियं ओहिनाणं ॥ ११ ॥ से किं तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं ? बड्ढमाणयं ओहिनाणं पसत्थेसु अज्झवसायट्ठाणेसु वट्टमाणस्स वड्ढमाण चरित्तस्स। विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाण चरित्तस्स। सव्वओ समंता ओहि वड्ढइ—

जावइआ तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स॥
ओगाहणा जहन्ना ओहीखित्तं जहन्नं तु ॥५५॥
सव्व बहु अगणि जीवा निरंतरं जत्तियं भरिज्जंसु ॥
खित्तं सव्वदिसागं परमोही खेत्तनिद्दिट्ठो ॥५६॥
अंगुलमावलियाणं भाग मसंखिज्ज दोसु संखिज्जा ॥
अंगुलमावलियंतो आवलिया अंगुल पुहुत्तं ॥५७॥
हत्थम्मि मुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउयम्मि बोद्धव्वो ॥
जोयण दिवसपुहुत्तं, पक्खंतो पन्नवीसाओ ॥५८॥

भरहम्मि अद्धमासो, जम्बुद्दीवम्मि साहिओ मासो ॥
वासं च मणुय लोए, वासपुहुत्तं च रुयगम्मि ॥५६॥
संखिज्जम्मि उ काले, दीवसमुद्दावि हुंति संखिज्जा ॥
कालम्मि असंखिज्जे, दीवसमुद्दा उ भइयव्वा ॥६०॥
काले चउण्हवुड्ढी, कालो भइयव्वु खित्त वुड्ढीए ॥
वुड्ढीए दव्वपज्जव, भइयव्वा खित्तकाला उ ॥६१॥
सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमयरं हवइ खित्तं ॥
अंगुल सेढी मित्तं, ओसप्पिणिओ असंखिज्जा ॥६२॥
से त्तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं सू ॥१२॥ से किं तं हीयमाणयं ओहिनाणं? हीयमाणयं ओहिनाणं अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं वड्ढमाणस्स वड्ढमाणचरित्तस्स संकिलिस्स माणस्स संकिलिस्समाणचरित्तस्स सव्वओ समन्ता ओही परिहायइ से त्तं हीयमाणयं ओहिनाणं ॥१३॥ से किं तं पडिवाइ ओहिनाणं ? पडिवाइ ओहिनाणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जय भागं वा संखिज्जय भागं वा बालग्गं वा बालग्ग पुहुत्तं वा लिक्खं वा लिक्खपुहुत्तंवा, जूयंवा जूयंपुहुत्तंवा, जवंवा जव पुहुत्तं वा। अंगुलं वा अंगुलपुहुत्तं वा। पायं वा पाय पुहुत्तं वा। विहत्थिं वा विहत्थि पहुत्तं वा। रयणिं वा रयणि पुहुत्तं वा। कुच्छिं वा कुच्छिपुहुत्तं वा, धणुं वा धणुपहुतं वा। गाउअं वा गाउयपुहुत्तं वा। जोयण

वा जोयणंपुहुत्तं वा। जोअणसयं वा जोयणसय पुहुत्तं वा जोयण सहस्सं वा जो यणसहस्स पुहुत्तं वा। जो यणलक्खं वा जोयणलक्ख पुहुत्तं वा। जोयण-कोडिं वा जोयणकोडि पुहुत्तं वा। जोयणकोडाकोडिं वा जोयणकोडाकोडि पुहुत्तं वा। [जो अणसंखिज्जं-वा जो अणसंखिज्ज पुहुत्तं वा। जो अण असंखेज्जंवा जो अणअसंखेज्जपुहुंत्तंवा।] उक्कोसेणं लोगं वा पासि त्ताणं पडिवइज्जा। से तं पडिवाइ ओहिनाणं ॥१४॥ से किं तं अपडिवाइ ओहिनाणं। अपडिवाइ ओहि-नाणंजेणं अलोगस्स एगमवि आगासपएसं जाणइ पा-सइ तेण परं अपडिवाइ ओहिनाणं। से त्तं अपडिवाइ ओहिनाणं ॥१५॥ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं-जहा दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्व ओ णं ओहिनाणी जहन्नेणं अणंताइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ उक्कोसेणं सव्वाइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ, खित्तओणं ओहिनाणी जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जय भागं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं असंखि ज्जाइं अलोगे लोगप्पमाण मित्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ, कालओ णं ओहिनाणी जहन्नेणं आवलि-याए असंखिज्जय भागं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ अईय

मणागयं च कालं जाणइ पासइ, भावओ णं ओहिनाणी जहन्नेणं अणंते भावे जाणइ पासइ, उक्केसेणवि अणंते भावे जाणइ पासइ। सव्व भावाण मणंत भागं भावे जाणइ पासइ ॥१६॥ ओही भवपच्चइओ गुणपच्चइओ य वण्णिओ दुविहो। तस्स य बहू विगप्पा दव्वे खित्ते य कालेय। नेरइयदेवतित्थंकरा य ओहिस्सऽबाहिरा हुंति। पासंति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासंति। से त्तं ओहिनाणपच्चक्खं से किं तं मणपज्जवनाणं? मणपज्जवनाणे णं भंते! किं मणुस्साणं उप्पज्जइ अमणुस्साणं? गोयमा! मणुस्साणं नो अमणुस्साणं०? जइमणुस्साणं किं संमुच्छिममणुस्साणं गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं? गोयमा? नोसंमुच्छिममणुस्साणं उपज्जई गब्भवक्कंतियमणुस्साणं। जइगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, अकम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, अन्तरदीवगगब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, गोयमा? कम्मभूमिय गब्भक्कंतियमणुस्साणं, नो अकम्मभूमिय गब्भवक्कंतियमणुस्साणं, नो अन्तरदीवग गब्भ वक्कंतियमणुस्साणं जइ कम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, किं संखिज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कंतियमणुस्साणं

असंखिज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ? गोयमा ? संखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, नो असंखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं । जइ संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं किं पज्जत्तग संखेज्जवासाउयकम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, अपज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ? गोयमा ! पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, नो अपज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं । जइ पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं० किं सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, सम्मामिच्छदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ? गोयमा ? सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्जावासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, नो मिच्छ दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणं०, नो सम्मामिच्छदिट्ठि पज्जत्तग

संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, जइ सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं किं संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, असंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं,। संजया संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ? गोयमा! संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, नो असंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं। नो संजयासंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं । जइ संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं किं पमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, अपमत्त संजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ? गोयमा ? अपमत्तसंजय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणु-

स्साणं, नो पमत्त सञ्जय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं। जइ अपमत्त संजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, किं इड्ढीपत्त अपमत्त संजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं अणिड्ढीपत्त अपमत्त संजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं? गोयमा! इड्ढीपत्तअपमत्त संजय सम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, नो अणिड्ढीपत्त अपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठि पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं। मणपज्जवनाणं समुप्पज्जइ ॥ सू० ॥ १७ ॥ तं च दुविहं उप्पज्जइ तंजहाउज्जुमई य विउलमई य तं समासओ चउव्विहं पन्नत्तं तंजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओणं उज्जुमई अणंते अणंत पएसिए खंधे जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहियंतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ। खित्तओणं उज्जुमई जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जय भागं उक्कोसेणं अहे

जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डग पयरे उड्ढं जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरियं जाव अन्तोमणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमिसु तीसाए अकम्मभूमिसु छपन्नाए अन्तरदीवगेसु सन्निपंचेंदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ पासइ तं चेव विउलमई अड्ढाईज्जेहिमंगुलेहिं अब्भहियत्तरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरागं खेत्तं जाणइ पासइ। कालओ णं उज्जुमई जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं अतीयमणागयं वा कालं जाणइ पासइ। तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ। भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ पासइ, सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ। तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ। मणपज्जवनाणं पुण जणमणपरिचिंतियत्थपागडणं। माणुसखित्तनिबद्धं गुणपच्चइयं चरित्तवओ ॥ ६५ ॥ से त्तं मणपज्जवनाणं ॥ सू० ॥ ॥ १८ ॥ से किं तं केवलनाणं ? केवलनाणं दुविहं पन्नत्तं, तंजहा—भवत्थकेवलनाणं च सिद्धकेवल-

नाणं च। से किं तं भवत्थकेवलनाणं? भवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—सजोगिभवत्थकेवलनाणं च अजोगिभवत्थकेवलनाणं च। से किं तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं? सजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—पढमसमयसजोगिभवत्थ, केवलनाणं च अपढम समय सजोगिभवत्थकेवलनाणं च, अहवा चरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च अचरम समयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च, से त्तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं। से किं तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं? अजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पन्नत्तं, तंजहा—पढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च अहवा चरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च अचरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च, से त्तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं, से त्तं भवत्थकेवलनाणं ॥सू०॥ १९॥ से किं तं सिद्धकेवलनाणं? सिद्धकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—अणंतरसिद्धकेवलनाणं च परंपरसिद्धकेवलनाणं च॥सू०॥२०॥ से किं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं? अणंतरसिद्धकेवलनाणं पन्नरसविहं पण्णत्तं, तंजहा—तित्थसिद्धा १, अतित्थसिद्धा २, तित्थयरसिद्धा ३, अतित्थयरसिद्धा ४, सयंबुद्धसिद्धा ५, पत्तेयबुद्ध-

सिद्धा ६, बुद्धबोहियसिद्धा ७, इत्थिलिंगसिद्धा ८, पुरिसलिंगसिद्धा ९, नपुंसगलिंगसिद्धा १०, सलिंगसिद्धा ११, अन्नलिंगसिद्धा १२, गिहिलिंगसिद्धा १३, एगसिद्धा १४, अणेगसिद्धा १५, से त्तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं ॥सू०॥२१॥ से किं तं परंपरसिद्धकेवलनाणं ? परंपरसिद्धकेवलनाणं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—अपढमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा, तिसमयसिद्धा, चउसमयसिद्धा, जाव दससमयसिद्धा, संखिज्जसमयसिद्धा, असंखिज्जसमयसिद्धा, अणंतसमयसिद्धा, से त्तं परंपरसिद्धकेवलनाणं, से त्तं सिद्धकेवलनाणं ॥ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ। खित्तओ णं केवलनाणी सव्वं खित्तं जाणइ पासइ। कालओ णं केवलनाणी सव्वं कालं जाणइ पासइ। भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ। अह सव्वदव्वपरिणाम, भावविण्णत्तिकारणमणंतं। सासय मप्पडिवाइ, एगविहं केवलं नाणं ॥ ६६ ॥ सू० ॥२२॥ केवलनाणेणऽत्थे, नाउं जे तत्थ पण्णवणजोगे। ते भासइ तित्थयरो, वइजोगसुयं हवइ सेसं ॥६७॥ से त्तं केवलनाणं, से त्तं नोइंदियपच्चक्खं,

से त्तं पच्चक्खनाणं ॥सू०॥२३॥ से किं तं परोक्खनाणं? परोक्खनाणं दुविहं पन्नत्तं, तंजहा—आभिणिबोहियनाणपरोक्खं च, सुयनाण परोक्खं च, जत्थ आभिणिबोहियनाणं तत्थ सुयनाणं, जत्थ सुयनाणं तत्थाभिणिबोहियनाणं, दोऽवि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं, तहवि पुण इत्थ आयरिया नाणत्तं पण्णवयंति—अभिनिबुज्झइति आभिणिबोहियनाणं, सुणेइत्ति सुयं, मइपुव्वं जेण सुयं, न मई सुयपुव्विया ॥सू०॥ ॥२४॥ अविसेसिया मई, मइनाणं च मइअन्नाणं च। विसेसिया सम्मद्दिट्ठिस्स मई मइनाणं, मिच्छद्दिट्ठिस्स मई मइअन्नाणं। अविसेसियं सुयं सुयनाणं च सुयअन्नाणं च। विसेसियं सुयं सम्मद्दिट्ठिस्स सुयं सुयनाणं, मिच्छद्दिट्ठिस्स सुयं सुयअन्नाणं ॥सू०॥ २५॥ से किं तंआभिणिबोहियनाणं? आभिणिबोहियनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—सुयनिस्सियं च, अस्सुयनिस्सियं च। से किं तं अस्सुयनिस्सियं? अस्सुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा—उप्पत्तिया १ वेणइया २, कम्मया ३, परिणामिया ४। बुद्धि चउव्विहा वुत्ता, पंचमा नोवलब्भइ ॥६८॥ सू० ॥ २६ ॥ पुव्वमदिट्ठमस्सुयमवेइय, तक्खणविसुद्धगहियत्था। अव्वाहयफलजोगा, बुद्धि उप्पत्तिया नाम ॥ ६९ ॥

भरहसिल१ पणिय२ रुक्खे३ खुड्डग४ पड५ सरड६ काय७ उच्चारे८। गय९ घयण१० गोल११ खंभे१२, खुड्डग१३ मग्गि१४ त्थि१५ पइ १६ पुत्ते १७ ॥७०॥ भरह १ सिल २ मिंढ ३ कुक्कुड ४, तिल ५ वालुय ६ हत्थि ७ अगड ८ वणसंडे ९। पायस १० अइया ११ पत्ते १२, खाडहिला १३ पंच पिअरो य १४ ॥७१॥ महुसित्थ १८ मुद्दि १९ अंके २०, य नाणए २१ भिक्खु २२ चेडगनिहाणे २३ ; सिक्खा २४ य अत्थ-सत्थे २५, इत्थी य महं २६ सयसहस्से २७ ॥७२॥ भरनित्थरणसमत्था, तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला। उभओलोगफलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥७३॥ निमित्ते १ अत्थसत्थे य २, लेहे ३ गणिए ४ य कूव ५ अस्से६ य। गद्दभ ७ लक्खण ८ गंठी ९, अगए १० रहिए ११ य गणिया १२ य ॥७४॥ सीया साडी दीहं, च तणं अवसव्वयं च कुंचस्स १३। निव्वोदए १४ य गोणे, घोडगपडणं च रुक्खाओ १५ ॥ ७५ ॥ उवओगदिट्ठसारा, कम्मपसंगपरिघोलणविसाला। साहुक्कारफलवई, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥७६॥ हेरण्णिए १ करिसए २, कोलिय ३ डोवे ४ य मुत्ति ५ घय६ पवए ७ तुन्नाए ८ वड्ढइय ९ पूयइ १० घड ११ चित्तकारे १२ य ॥ ७७ ॥ अणुमाणहेउदिट्ठंतसाहिया

वयविवागपरिणामा । हियनिस्सेयसफलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥७८॥ अभए १ सिट्ठि कुमारे २, देवी ४ उदिओदए हवइ राया ५ । साहू य नंदिसेणे ६, धणदत्ते ७ सावग ८ अमच्चे ९ ॥७९॥ खमए १० अमच्चपुत्ते ११, चाणक्के १२ चेव थूलभद्दे १३ य । नासिकसुंदरिनंदे १४ वइरे १५ परिणामिया बुद्धी ॥८०॥ चलणाहण १६ आमंडे १७, मणी १८ य सप्पे १९ य खग्गि २० थूभिंदे २१ । परिणामियबुद्धीए, एवमाई उदाहरणा ॥ ८१ ॥ सेत्तं अस्सुयनिस्सियं । से किं तं सुयनिस्सियं ? सुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-उग्गहे १ ईहा २ अवाओ ३ धारणा ४ ॥ सू० ॥ २६ ॥ से किं तं उग्गहे ? दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-अत्थुग्गहे य वंजणुग्गहे य, ॥ सू० २७ ॥ से किं तं वंजणुग्गहे ? वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-सोइंदियवंजणुग्गहे, घाणिंदियवंजणुग्गहे, जिब्भिंदियवंजणुग्गहे, फासिंदियवंजणुग्गहे, सेत्तं वंजणुग्गहे ॥ सू० ॥ २८ ॥ से किं तं अत्थुग्गहे ? अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-सोइंदियअत्थुग्गहे, चक्खिंदियअत्थुग्गहे, घाणिंदियअत्थुग्गहे, जिब्भिंदियअत्थुग्गहे, फासिंदियअत्थुग्गहे, नोइंदियअत्थुग्गहे ॥ सू० ॥ २९ ॥ तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा

नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तंजहा-ओगेण्हणया, उवधारणया, सवणया, अवलंबणया, मेहा, से त्तं उग्गहे ॥सू०॥३०॥ से किं तं ईहा? ईहा छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदियईहा, चक्खिंदियईहा, घाणिंदियईहा, जिब्भिंदियईहा, फासिंदियईहा, नोइंदियईहा, तीसेणं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणा वंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तंजहा-आभोगणया, मग्गणया, गवेसणया, चिंता, वीमंसा, से त्तं ईहा ॥ सू० ॥ ३१ ॥ से किं तं अवाए ? अवाए छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-सोइंदियअवाए, चक्खिंदियअवाए, घाणिंदियअवाए, जिब्भिंदियअवाए, फासिंदियअवाए, नोइंदियअवाए, तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवन्ति, तंजहा-आउट्टणया, पच्चाउट्टणया, अवाए, बुद्धी, विण्णाणे, से त्तं अवाए ॥सू०३२॥ से किं तं धारणा ? धारणा छव्विहा पण्णत्ता तंजहा-सोइंदियधारणा, चक्खिंदियधारणा, घाणिंदियधारणा, जिब्भिंदियधारणा, फासिंदियधारणा, नोइंदियधारणा, तीसे णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तंजहा-धरणा, धारणा, ठवणा, पइट्ठा, कोट्ठे, से त्तं धारणा ॥ सू० ॥ ३३ ॥ उग्गहे इक्कस-

मइए, अंतोमुहुत्तिया ईहा, अंतोमुहुत्तिए अवाए, धारणा संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ॥ सू० ॥ ३४ ॥ एवं अट्ठावीसइविहस्स आभिणिबोहियनाणस्स वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि पडिबोहगदिट्ठंतेण मल्लगदिट्ठंतेण । से किं तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं ? पडिबोहगदिट्ठंतेणं से जहानामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहिज्जा, अमुगा अमुगत्ति, तत्थ चोयगे पन्नवयं एवं वयासी-किं एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ? दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ? जाव दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ?, संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ?, असंखिऊ समयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ?, एवं वयंतं चोयगं पन्नवए एवं वयासी-नो एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, जाव नो दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, से त्तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं । से किं तं मल्लगदिट्ठंतेणं ? मल्लगदिट्ठंतेणं से जहानामए केइ पुरिसे आवागसीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेगं उदगबिंदुं पक्खेविज्जा

से नट्ठे,अण्णेऽवि पक्खित्ते सेऽवि नट्ठे,एवं पक्खिप्प-
माणेसु पक्खिप्पमाणेसु होही से उदगबिंदू. जे णं
तं मल्लगं रावेहिइत्ति; होही से उदगबिंदू, जे णं
तंसि मल्लगंसि ठाहिति; होही से उदगबिंदू जेणं तं
मल्लगं भरिहित; होही से उदगबिंदू, जे णं तं मल्लगं
पवाहेहिति; एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमा-
णेहिं अणंतेहिं पुग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ;
ताहेहुंति करेइ नो चेव णं जाणइ के वेस सद्दाइ ?
तओ ईहं पविसई,तओजाणई अमुगे एस सद्दइ;तओ
अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं
पविसइ,तओणं धारेइ संखिज्जं वा कालं,असंखिज्जं
वा कालं, से जहानामए केइ पुरसे अव्वत्तं सद्दं
सुणिज्जा, तेणं सद्दोत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ
के वेस सद्दाइ; तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ
अमुगे एस सद्दे, तओ अवायं पविसइ, तओ से
उवगयं हवइ; तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ
संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए
केइ पुरिसे अव्वत्तं रूवं पासिज्जा तेणं रूवत्ति उग्ग
हिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रूवत्ति; तओ ईहं-
पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रूवे, तओ अवायं
पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पवि-

सइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइपुरिसे अव्वत्तं गंधं अग्घाइज्जा तेणं गंधत्तिउग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस गंधेत्ति; तओ ईहं पविसइ. तओ जाणइ अमुगे एस गंधे; तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ; तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए-केइ पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्जा तेणं रसोत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रसेत्ति; तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ; तओ धारणं पविसइ,तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं फासं पडिसंवेइज्जा तेणं फासेत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस फासओत्ति; तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उहगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पासिज्जा तेणं सुमिणेत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस सुमिणेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे

एस सुमिणे; तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं, से त्तं मल्लगदिट्ठंतेणं ॥ सू० ३५ ॥ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वाइं दव्वाइं जाणइ, न पासइ। खेत्तओणं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ न पासइ। कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं कालं जाणइ न पासइ। भावओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ, न पासइ।

उग्गह ईहाऽवाओ, य धारणा एव हुंति चत्तारि।
आभिणिबोहियनाणस्स भेयवत्थू समासेणं ॥ ८२ ॥
* अत्थाणं उग्गहणम्मि उग्गहो तह वियालणे ईहा।
ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारणं बिंति ॥८३॥
उग्गह इक्कं समयं, ईहावाया मुहुत्तमद्धं तु।
कालमसंखं संखं, च धारणा होई नायव्वा ॥ ८४ ॥
पुट्ठं सुणेइ सद्दं, रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु।
गंधं रसं च फासं च, बद्धपुट्ठं वियागरे ॥ ८५ ॥

---

* अत्थाणं उग्गहणं, च उग्गहं तह वियालणं ईहं। ववसायं च अवायं धरणं पुण धारणं बिंति ॥ १ ॥ इति पाठान्तरगाथा।

भासासमसेढीओ, सद्दं जं सुणइ मीसियं सुणइ ।
वीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ नियमा पराघाए ॥ ८६ ॥
ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा ।
सन्ना सई मई पन्ना, सव्वं आभिणिबोहियं ॥ ८७ ॥

से त्तं आभिणिबोहियनाणपरोक्खं, से त्तं मइनाणं ॥ सू० ॥ ३६ ॥ से किं तं सुयनाणपरोक्खं ? सुयनाणपरोक्खं चोद्दसविहं पण्णत्तं तंजहा—अक्खरसुयं १ अणक्खरसुयं २ सण्णिसुयं ३ असण्णिसुयं ४ सम्मसुयं ५ मिच्छसुयं ६ साइयं ७ अणाइयं ८ सपज्जवसियं ९ अपज्जवसियं १० गमियं ११ अगमियं १२ अंगपविट्ठं १३ अणंगपविट्ठं १४ ॥ सू० ॥ ३७ ॥ से किं तं अक्खरसुयं ? अक्खरसुयं तिविहं पण्णत्तं तंजहा—सन्नक्खरं, वंजणक्खरं, लद्धिअक्खरं । से किं तं सन्नक्खरं ? सन्नक्खरं अक्खरस्स संठाणागिई, से त्तं सन्नक्खरं । से किं तं वंजणक्खरं ? वंजणक्खरं अक्खरस्स वंजणाभिलावो, से त्तं वंजणक्खरं । से किं तं लद्धिअक्खरं ? लद्धिअक्खरं अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खरं समुप्पजइ, तंजहा—सोइंदिय लद्धिअक्खरं, चक्खिंदिय लद्धिअक्खरं, घाणिंदिय लद्धिअक्खरं, रसणिंदिय लद्धिअक्खरं, फासिंदिय लद्धिअक्खरं, नोइंदिय लद्धिअक्खरं, से त्तं

लद्धिअक्खरं, से त्तं अक्खरसुयं ॥ से किं तं अणक्खरसुयं? अणक्खरसुयं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—ऊससियं नीससियं, निच्छूढं खासियं च छीयं च। निस्सिंघियमणुसारं, अणक्खरं छेलियाईयं ॥ ८८ ॥

से त्तं अणक्खरसुयं ॥ सू० ॥ ३८ ॥ से किं तं सण्णिसुयं? सण्णिसुयं तिविहं पण्णत्तं, तंजहा—कालिओवएसेणं, हेऊवएसेणं, दिट्ठिवाओवएसेणं। से किं तं कालिओवएसेणं? कालिओवएसेणं जस्स णं अत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से णं सण्णीति लब्भइ। जस्सणं नत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से णं असण्णीति लब्भइ, से त्तं कालिओवएसेणं। से किं तं हेऊवएसेणं? हेऊवएसेणं जस्सणं अत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं सण्णीति लब्भइ। जस्स णं नत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं असण्णीति लब्भइ, से त्तं हेऊवएसेणं। से किं तं दिट्ठिवाओवएसेणं? दिट्ठिवाओवएसेणं सण्णिसुयस्स खओवसमेणं सण्णी लब्भइ, असण्णिसुयस्स खओवसमेणं असण्णी लब्भइ, से त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं, से त्तं सण्णिसुयं, से त्तं असण्णिसुयं ॥ सू० ॥ ३९ ॥ से किं तं सम्मसुयं? सम्म-

सुयं जं इमं अरहंतेहिं भगवंतेहिं उप्पण्णणाणदंसणधरेहिं तेलुक्कनिरिक्खियमहियपूइएहिं तोयपडुप्पण्णमणागयजाणएहिं सव्वण्णूहिं सव्वदरिसीहिं पणीयं दुवालसंगं गणिपिडगं, तंजहा—आयारो १ सूयगडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ विवाहपण्णत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुयं ११ दिट्ठिवाओ १२, इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं चोद्दसपुव्विस्स सम्मसुयं, अभिण्णदसपुव्विस्स सम्ममुयं, तेण परं भिण्णेसु भयणा, से त्तं सम्मसुयं ॥ सू० ४० ॥ से किं तं मिच्छासुयं ? मिच्छासुयं जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छंदबुद्धिमइविगप्पियं, तंजहा—भारहं, रामायणं, भीमासुरुक्खं, कोडिल्लयं, सगडभद्दियाओ, खोड (घोडग) मुहं, कप्पासियं, नागसुहुमं, कणगसत्तरी, वइसेखियं, बुद्धवयणं, तेरासियं, काविलियं, लोगायतं, सट्ठितंतं, माढरं, पुराणं, वागरणं, भागवयं, पायंजली, पुस्सदेवयं, लेहं, गणियं, सउणरुयं, नाडयाइं, अहवा बावत्तरिकलाओ, चत्तारि य वेया संगोवंगा, एयाइं मिच्छदिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइं मिच्छासुयं, एयाइं चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्त-

परिग्गहियाइं सम्मसुयं, अहवा मिच्छदिट्ठिस्सवि एयाइं चेव सम्मसुयं, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ जम्हा ते मिच्छदिट्ठिया तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठीओ चयंति, से त्तं मिच्छासुयं ॥ सू० ॥ ४१ ॥ से किं तं साइयं सपज्जवसियं, अणाइयं अपज्जवसियं च ? इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं वुच्छित्तिनयट्ठयाए साइयं सपज्जवसियं अवुच्छित्तिनयट्ठयाए अणाइयं अपज्जवसियं, तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, तत्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, बहवे पुरिसे य पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, खेत्तओ णं पंच भरहाइं पंचेरवयाइं पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, पंच महाविदेहाइं पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, कालओ णं उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, नो उस्सप्पिणिं नो ओसप्पिणिं च पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, भावओ णं जे जया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, ते तया भावे पडुच्च साइयं सपज्जवसियं खाओवसमियं पुण भावं पडुच्च अणाइयं अपज्जव-

सियं, अहवा भवसिद्धियस्स सुयं साइयं सपज्जवसियं च, अभवसिद्धियस्स सुयं अणाइयं अपज्जवसियं च, सव्वागासपएसग्गं सव्वागासपएसेहिं अणंतगुणियं पज्जवक्खरं निप्फज्जइ, सव्वजीवाणंपि य णं अक्खरस्स अणंतभागो, निच्चुग्घाडियो जइ पुण सोऽवि आवरिज्जा तेणं जीवो अजीवत्तं पाविज्जा,—"सुट्ठुवि मेहसमुदए, होइ पभा चंदसूराणं" से त्तं साइयं सपज्जवसियं, से त्तं अणाइयं अपज्जवसियं ॥ सू० ॥ ४२ ॥ से किं तं गमियं? गमियं दिट्ठिवाओ, से किं तं अगमियं अगमियं कालियं सुयं, से त्तं गमियं, से त्तं अगमियं। अहवा तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—अंगपविट्ठं, अंग बाहिरं च। से किं तं अंगबाहिरं? अंगबाहिरं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—आवस्सयं च, आवस्सयवइरित्तं च। से किं तं आवस्सयं? आवस्सयं छव्विहं पण्णत्तं, तंजहा—सामाइयं, चउवीसत्थओ, वंदणयं, पडिक्कमणं, काउस्सग्गो, पच्चक्खाणं; से त्तं आवस्सयं। से किं तं आवस्सयवइरित्तं? आवस्सयवइरित्तं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—कालियं च, उक्कालियं च। सेकिंतंउक्कालियं? अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—दसवेयालियं, कप्पियाकप्पियं, चुल्लकप्पसुयं, महाक-

प्पसुयं, उववाइयं, रायपसेणियं, जीवाभिगमो, पण्णवणा, महापण्णवणा, पमायप्पमायं, नंदी, अणुओगदाराइं, देविंदत्थओ, तंदुलवेयालियं, चंदाविज्झयं, सूरपण्णत्ती, पोरिसिमण्डलं, मण्डलपवेसो, विज्जाचरणविणिच्छओ, गणिविज्जा, झाणविभत्ती, मरणविभत्ती, आयविसोही, वीयरागसुयं, संलेहणासुयं, विहारकप्पो, चरणविही, आउरपच्चक्खाणं, महापच्चक्खाणं, एवमाइ; से त्तं उक्कालियं। से किं तं कालियं ? कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा— उत्तरज्झयणाइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीहं, महानिसीहं, इसिभासियाइं, जम्बूदीवपन्नत्ती, दीवसागरपन्नत्ती, चंदपन्नत्ती, खुड्डिया विमाणपविभत्ती-महल्लिया विमाणपविभत्ती, अंगचूलिया, वग्गचूलिया, विवाहचूलिया, अरुणोववाए, वरुणोववाए, गरुलोववाए, धरणोववाए, वेसमणोववाए, वेलंधरोववाए, देविंदोववाए, उट्ठाणसुए, समुट्ठाणसुए, नागपरियावलियाओ, निरयावलियाओ कप्पियाओ, कप्पवाडंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हीदसाओ, आसोविसभावणाणं, दिट्ठिविसभावणाणं, सुमिण भावणं महासुमिणभावणाणं, तेयग्गिनिसग्गाणं, एवमाइयाइं चउरासीइं पइन्नगसहस्साइं

भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स, तहा संखिज्जाइं पइन्नगसहस्साइं मज्झिमगाणं जिणवराणं, चोद्दस पइन्नगसहस्साइं भगवओ वद्धमाणसामिस्स, अवहा जस्स जत्तिया सीसा उप्पत्तियाए, वेणइयाए कम्मयाए, पारिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइं. पत्तेयबुद्धावि तत्तिया चेव, से त्तं कालियं, से त्तं आवस्सयवइरित्तं, से त्तं अणंगपविट्ठं ॥सू०॥४३॥ से किं तं अंगपविट्ठं? अंगपविट्ठं दुवालसविहं पण्णत्तं, तंजहा—आयारो १ सूयगडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुयं ११ दिट्ठिवाओ १२ ॥ सू० ॥ ४४ ॥ से किं तं आयारे ? आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयारगोयरविणयवेणइयसिक्खाभासाअभासाचरणकरणजायामायावित्तीओ आघविज्जंति, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—नाणायारे, दंसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे, आयारे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से

णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे, दो सुयक्खंधा, पणवीसं अज्झयणा, पंचासीइ उद्देसणकाला, पंचासीइ समुद्देसणकाला, अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परुविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं आयारे १ ॥ सू० ॥ ४५ ॥ से किं तं सूयगडे ? सूयगडे णं लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ, लोयालोए सूइज्जइ, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति, ससमए सूइज्जद, परसमए सूइज्जइ, ससमयपरसमए सूइज्जइ, सूयगडे णं असीयस्स किरियावाइसयस्स, चउरासीइए अकिरियावाईणं, सत्तट्ठीए अण्णाणीयवाईणं, बत्तीसाए वेणइयवाईणं, तिण्हं तेसट्ठाणं पासंडियसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ, सूयगडे णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए बिइए अंगे, दो सुयक्खं-

धा, तेवीसं अज्झयणा, तित्तीसं उद्देसणकाला, तित्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परुविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं सूयगडे २ ॥सू०॥४६॥ से किं तं ठाणे ? ठाणे णं जीवा ठाविज्जंति, अजीवा ठाविज्जंति, जीवाजीवा ठाविज्जंति, ससमए ठाविज्जइ, परसमए ठाविज्जइ, ससमयपरसमएठाविज्जइ, लोएठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोयालोए ठाविज्जइ, । ठाणे णं टंका, कूडा, सेला, सिहरिणो, पब्भारा, कुंडाइं, गुहाओ, आगरा, दहा, नईओ, आघविज्जंति । ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसट्ठाणगविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ । ठाणे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ; संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे, दसअज्झयणा

एगवीसं उद्देसणकाला, एक्कवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरि पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं ठाणे ३॥सू०॥ ४७॥ से किं तं समवाए ? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति, जीवाजीवा समासिज्जंति, ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमयपरसमए समासिज्जइ, लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ लोयालोए समासिज्जइ। समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणसयविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ; दुवालसविहस्स य गणिपिढगस्स पल्लवगे समासिज्जइ, समवायस्स णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ, निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ, पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाएचउत्थे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले

सयसहस्से पयग्गेणं; संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से त्तं समवाए ४॥ सू०॥ ४८॥ से किं तं विवाहे? विवाहे णं जीवा विआहिज्जंति, अजीवा विआहिज्जंति, जीवाजीवा विआहिज्जंति, ससमए विआहिज्जति, परसमए विआहिज्जति, ससमएपरसमए विआहिज्जति, लोए विआहिज्जति, अलोए विआहिज्जति, लोयालोए विआहिज्जति, विवाहस्सणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झयणसए, दस उद्देसगसहस्साइं समुद्देसगसहस्साइं, छत्तीसं वागरणसहस्साइं, दो लक्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता

भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ,से त्तं विवाहे ५॥सू०॥४६॥से किं तं नायाधम्मकहाओ ? नायाधम्मकहासु णं नायाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परियाया, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति, दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवाक्खाइया सयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइयउवक्खाइयासयाइं एवामेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ हवंतित्ति समक्खायं। नायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे, दो सुयक्खंधा,

एगूणवीसं अज्झयणा, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं नायाधम्मकहाओ ६ ॥ सू० ॥ ५० ॥ से किं तं उवासगदसाओ? उवासगदसासुणं समणोवासयाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापिवरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहागाइं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जणया, पडिमाओ, उवसग्गा, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खांणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुलपच्चाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति; उवासगदसाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंग-

ट्ठयाए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झनणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ; से त्तं उवासगदसाओ ७ ॥ सू० ॥ ५१ ॥

सं किं तं अंतगडदसाओ ? अंतगडदसासु णं अंतगडाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, अंतकिरियाओ, आघविज्जंति; अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणी, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, अट्ठ वग्गा, अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला

संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं; संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पन्न विज्जंति परूविज्जंति, डंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति; से एवं आया, एवं नाया, एवं विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ; से त्तं अंतगडदसाओ ८ ॥ सू० ५२ ॥

से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ? अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, पडिमाओ, उवसग्गा, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं, अणुत्तरोववाइय त्ति उववत्ती, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ, आघविज्जंति, अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, तिन्नि वग्गा, तिन्नि

उद्देसणकाला, तिन्नि समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ ॥ सू० ५२ से किं तं पण्हावागरणाइं ? पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं, अट्ठुत्तरं अपसिणसयं, अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं; तंजहा—अंगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं, अन्नेविविचित्ता विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति, पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ; से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्झयणा, पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला, सेगाढसे-पयसहस्साइं पयग्गेणं; संखेज्जा अक्खरा, अणंत-मे ५ अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, स्याप-

यकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति; से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया; एवं चरणकरणरूवणा आघविज्जइ; से त्तं पण्हावागरणाइं १० ॥ सू० ॥ ५४ ॥ से किं तं विवागसुयं ? विवागसुए णं सुकडदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जइ, तत्थ णं दस दुहविवागा दस सुहविवागा । से किं तं दुहविवागा ? दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं नगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, निरयमणाइं, संसारभवपवंचा दुहपरंपराओ, दुकुलपच्चायाइओ, दुल्लहबोहियत्तं, आघविज्जइ; से त्तं दुहविवागा। से किं तं सुहविवागा ? सुहविवागेसु णं सुहविवागाणं नगराइं, उज्जणाइं, वणसंडाइ चेइयाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, ासलोगा,ा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, संगहणीच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, याए ारंपराओ, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा,

अंतकिरियाओ, आघविज्जंति। विवागसुयस्य णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए इक्कारसमे अंगे, दो सुयक्खंधा, वीसं अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला, संखिज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं विवागसुयं ११ ॥ सू० ५५ ॥ से किं तं दिट्ठिवाए? दिट्ठिवाएणं सव्वभावपरूवणा आघविज्जइ, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा-परिकम्मे १ सुत्ताइं २ पुव्वगए ३ अणुओगे ४ चूलिया ५। से किं तं परिकम्मे? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तंजहा-सिद्धसेणिया परिकम्मे १ मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ पुट्ठसेणिया-परिकम्मे ३ ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ चुयाचुयसेणियाप-

रिकम्मे ७। से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ? सिद्धसेणियापरिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा-मउगापयाइं १ एगट्ठियपयाइं २ अट्ठपयाइं ३ पाढोआगासपयाइं ४ केउभूयं ५ रासिबद्धं ६ एगगुणं ७ दुगुणं ८ तिगुणं ९ केउभूयं १० पडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ सिद्धावत्तं १४, से त्तं सिद्धसेणियापरिकम्मे १। से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा-माउयापयाइं १ एगट्ठियपवाइं २ अट्ठपयाइं ३ पाढोआगासपयाइं ४ केउभूयं ५ रासिबद्धं ६ एगगुणं ७ दुगुणं ८ तिगुणं ९ केउभूयं १० पडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ मणुस्सावत्तं १४, से त्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे २। से किं तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ? पुट्ठसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तंजहा-पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० पुट्ठावत्तं ११, से त्तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ३। से किं तं ओगाढसेणियापरिकम्मे ? ओगाढसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तंजहा-पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं

६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० ओगाढावत्तं ११, से त्तं ओगाढसेणियापरिकम्मे ४। से किं तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ? उवसंपज्जणसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तंजहा—पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० उवसंपज्जणवत्तं ११, से त्तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५। से किं तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ? विप्पजहणसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तंजहा-पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० विप्पजहणावत्तं ११, से त्तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६। से किं तं चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ? चुयाचुयसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पन्नत्ते, तंजहा—पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० चुयाचुयवत्तं ११, से त्तं चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ७। छ चउक्कनइयाइं, सत्त तेरासियाइं; से त्तं परिकम्मे १।

से किं तं सुत्ताइं ? सुत्ताइं बावीसं पन्नत्ताइं, तंजहा—उज्जुसुयं १ परिणयापरिणयं २ बहुभंगियं ३ विजयचरियं ४ अणंतरं ५ परंपरं ६ मासाणं ७ संजूहं ८ संभिएणं ९ आहच्चायं १० सोवत्थियावत्तं ११ नंदावत्तं १२ बहुलं १३ पुट्ठापुट्ठं १४ वियावत्तं १५ एवंभूयं १६ दुयावत्तं १७ वत्तमाणं पयं १८ समभिरूढं १९ सव्वओभद्दं २० पस्सासं २१ दुप्पडिग्गहं २२, इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिन्नच्छेयनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए; इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिन्नच्छेयनइयाणि आजीवियसुत्तपरिवाडीए; इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं तिगणइयाणि तेरासिय सुत्तपरिवाडीए; इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए; एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीई सुत्ताइं भवंतित्ति मक्खायं, से त्तं सुत्ताइं २। से किं तं पुव्वगए? पुव्वगए चउद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा—उप्पायपुव्वं १ अग्गाणीयं २ वीरियं ३ अत्थिनत्थिप्पवायं ४ नाणप्पवायं ५ सच्चप्पवायं ६ आयप्पवायं ७ कम्मप्पवायं ८ पच्चक्खाणप्पवायं (पच्चक्खाणं) ९ विज्जणुप्पवायं १० अवंझं ११ पाणाऊ १२ किरियाविसालं १३ लोकबिंदुसारं १४। उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता।

अग्गाणीयपुव्वस्स णं चोद्दस वत्थू; दुवालस चूलिया-वत्थू पण्णत्ता। वीरियपुव्वस्स णं अट्ठ वत्थू अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता। अत्थिनत्थिप्पवायपुव्वस्स णं अट्ठारस वत्थू, दस चूलियावत्थू पण्णत्ता। नाण-प्पवायपुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णता। सच्चप्पवाय-पुव्वस्स णं दोण्णिवत्थूपण्णत्ता। आयप्पवायपुवस्स णं सोलस वत्थू पण्णत्ता। कम्मप्पवायपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता। पच्चक्खाणपुव्वस्स णं वीसं वत्थू पण्णत्ता। विज्ञाणुप्पवायपुव्वस्स णं पन्नरस वत्थू पण्णत्ता। अवंझपुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता। पाणाउपुव्वस्स णं तेरस वत्थू पण्णत्ता। किरिया-विसाल पुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता। लोकबिंदु-सारपुव्वस्स णं पणुवीसं वत्थू पण्णत्ता, गाहा—

दस १ चोदस २ अट्ठ ३ ऽट्ठारसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि। सोलस ७ तीस ८ वीसा ९, पन्नरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ८९ ॥

बारस इक्कारसमे, बारसमे तेरसेव वत्थूणि। तीसा पुण तेरसमे, चोद्दसमे पण्णवीसाओ ॥ ९० ॥

चत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चेवदस ४ चेव चुल्लवत्थूणि। आइल्लाण चउण्हं, चूलिया नत्थि ॥९१

से तं पुव्वगए। से किं तं अणुओगे? अणुओगे दुविहे

पण्णत्ते, तंजहा—मूलपढमाणुओगे, गंडियाणुओगे य। से किं तं मूलपढमाणुओगे? मूलपढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा, देवगमणाइं, आउं, चवणाइं, जम्मणाणि, अभिसेया रायवरसिरीओ, पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ, तित्थपवत्तणाणि य, सीसा, गणहरा, अज्जपवत्तिणीओ संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं, जिणमणपज्जवओहिनाणी, सम्मत्तसुयनाणिणो य, वाई, अणुत्तरगईय, उत्तरवेउ चिणो य मुणिणो, जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जह देसिओ, जच्चिरं च कालं, पोआवगया जे जहिं जत्तियाइं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता अंतगडे, मुणिवरुत्तमे, तिमिरओघ विप्पमुक्के मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्ते, एवमन्ने य एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिया, से त्तं मूलपढमाणुओगे से किं तं गंडियाणुओगे? गंडियाणुओगे कुलगरगंडियाओ, तित्थयरगंडियाओ, चक्कवट्टिगंडियाओ, दसारगंडियाओ, बलदेवगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ, गणधरगंडियाओ, भद्दबाहुगंडियाओ, तवोकम्मगंडियाओ, हरिवंसगंडियाओ उस्सप्पिणीगंडियाओ, ओसप्पिणीगंडियाओ, चित्तंतरगंडियाओ अमरनरतिरियनिरयगइगमणविविहपरियट्टणेसु एव-

माइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति, पण्णविज्जंति से त्तं गंडियाणुओगे, से तं अणुओगे ४। से किं तं चूलियाओ ? आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं, चूलिया, सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं, से त्तं चूलियाओ। दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखिज्जाओं निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, चोद्दस पुव्वाइं, संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जापहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं पयसदस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं नाया एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जति, से त्तं दिट्ठिवाए १२ ॥ सू॥ ५६ ॥ इच्चेइयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा, अणंता हेऊ, अणंता अहेऊ, अणंता कारणा, अणंता अकारणा, अणंता जीवा अणंतता

अजीवा अणंता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा पण्णत्ता—

भावमभावा हेऊमहेउ कारणमकारणे चेव ।
जीवाजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥९२॥

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइंसु । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता चउरंतं संसारकंतारं वीईवयंति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्संति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवई य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए

अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे। से जहानामए पंचत्थिकाए न कयाइनासी न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे, एवामेव दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे। से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ, खित्तओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ, कालओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ, भावओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ, ॥ सू ॥ ५७ ॥

अक्खर संन्नी सम्मं, साइयं खलु सपज्जवसियं च।
गमियं अंगपविट्ठं, सत्तवि एए सपडिवक्खा ॥ ९३ ॥
आगमसत्थग्गहणं, जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं।
बिंति सुयनाणलंभं, तं पुव्वविसारया धीरा ॥ ९४ ॥

सुस्सूसइ १ पडिपुच्छइ २ सुणेइ ३ गिण्हइ ४

य ईहएयावि ५ । तत्तो अपोहए ६ वा, धारेइ ७ करेइ वा सम्मं ८ ॥ ९५ ॥

मूअं हुंकारं वा, वाढक्कारं पडिपुच्छ वीमंसा। तत्तो पसंगपारायणं च परिणिट्ठ सत्तमए ॥ ९६ ॥

सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ । तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥ ९७ ॥

सेत्तं अंगपविट्ठं, से त्तं सुयनाणं, से त्तं परोक्ख-नाणं, से त्तं नंदी ॥ नंदी समत्ता ॥

इअ नंदीसुत्तं समत्तम्

पुस्तकें मिलने के पते—

१—जैन हितेच्छु श्रावक मंडल, रतलाम
२—घासीलाल चाँदमल जैन सहर शराय, रतलाम
३—छोटेलाल यति रांगडी चौक, बीकानेर
४—जैन प्रकाश पुस्तकालय सूजानगढ़

मेरी भावना

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते, सब जग जान लिया ।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया ।।
बुद्ध वीर जिन हरिहर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो ।
भक्त भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो ।।
विषयों की आशा नहीं जिनके, साम्य भाव धन रखते हैं ।
निज पर के हित साधन में जो, निशिदिन तत्पर रहते हैं ।।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं ।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं ।।
रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे ।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ।।
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ ।
परधन बनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ ।।
अहंकार का भाव न रक्खूं, नहीं किसी पर क्रोध करूँ ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ ।।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ ।।
मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे ।
दीन दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा श्रोत बहे ।।
दुर्जन-क्रूर-कुमार्ग रतों पर, क्षोभ न मेरे को आवे ।
साम्य भाव रखूं मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ।।
गुणी जनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे ।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ।।

होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे ।
गुण ग्रहण का भाव रहे, नित दृष्टि न दोषों पर जावे ॥
कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे ।
लाखों वर्षों तक जीवूँ, या मृत्यु आज ही आ जावे ॥
अथवा कोई कैसा ही, भय या लालच देने आवे ।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ॥
होकर सुख में मग्न न फूलें, दुःख में कभी न घबरावें ।
पर्वत, नदी, स्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावें ॥
रहे अडोल, अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, सहन शीलता दिखलावें ॥
सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे ।
वैर पाप अभिमान छोड़, जग नित्य नये मंगल गावें ॥
घर घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावें ।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावें ॥
ईति भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे ।
धर्म निष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे ॥
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे ।
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैल सर्व हित किया करे ॥
फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे ।
अप्रिय, कटुक, कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करे ॥
बनकर सब "युग-बीर" हृदय से, देशोन्नति रत रहा करें ।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुःख संकट सहा करे ॥

जीवन कार्यालय अजमेर के स्थाई ग्राहक और पत्र व्यवहार के नियम

(१) स्थाई ग्राहक बनने की प्रवेश—फीस एक रुपया।

(२) "माला" की पुस्तकें प्रकाशित होने पर १५ दिन पहले मूल्य आदि का "सूचना-पत्र" भेज देने के बाद ग्राहकों को २५) सैकड़ा कमीशन काट कर वी० पी० भेजी जाती है।

(३) एक रुपया से कम की वी० पी० नहीं भेजी जायगी।

(४) आर्डर भेजते समय स्पष्ट लिखना चाहिए कि पुस्तकें रेल से या डाक से किस प्रकार भेजी जाँय।

(५) पुस्तकें मंगाकर वापस करने पर नुकसान तथा डाक महसूल कुल ख़र्च मंगाने वाले से वसूल किया जावेगा, अतः ऑर्डर देने से पूर्व बहुत सोच समझ कर पुस्तकें मङ्गानी चाहियें।

(६) बैरङ्ग पत्र नहीं लिये जावेंगे और न पत्र के साथ भेजे हुए टिकटों की कोई जिम्मेदारी कार्यालय पर होगी।

(७) ऑर्डर भेजते समय, मुकाम, डाकखाना तथा ज़िला व रेलवे स्टेशन बहुत साफ, व स्पष्ट लिखना चाहिये।

(८) यदि किसी वी० पी० में भूल जान पड़े तो उसे लौटाना नहीं चाहिये, वी० पी० छुड़ाकर हमें तुरन्त लिखें, भूल ठीक कर देंगे।

नोट—हिन्दी की प्रायः सभी प्रसिद्ध २ प्रकाशकों की पुस्तकें उचित मूल्य पर जीवन कार्यालय अजमेर में सदैव मिल सकेंगी।

पत्र व्यवहार का पता

पंडित छोटेलाल यति

जीवन कार्यालय (तारघर के पीछे) अजमेर

इस प्रेस में छपाई बहुत उमदा, शुद्ध, सस्ती और जल्दी होती है
पुस्तक छपाई के लिए ख़ास प्रबन्ध है। सञ्चालक-जीतमल लूणिया
पता—आदर्श प्रेस, केसरगंज, अजमेर।

जैन-धर्म में क्रान्ति फैलाने वाले ग्रन्थ

दयादान प्रचारक पुस्तकें। इन पर कमीशन नहीं मिलेगा।

१ अनुकम्पा विचार	।)	१९ सद्धर्म मण्डन	१॥)
२ परदेशी राजा	।)	२० अस्तेय व्रत	=)
३ आदर्श क्षमा	-)॥	२१ सत्यव्रत	≡)
४ अर्जुनमाली [राधेश्याम तर्जमें]	=)	२२ सुबाहु कुमार	।)
५ नंदन मणीहार	)॥	२३ अहिंसा व्रत	।)
६ प्रार्थना	-)	२४ वैधव्य दीक्षा	-)
७ सुदर्शन	-)	२५ ब्रह्मचर्यव्रत	=)
८ मदनरेखा	-)	२६ धर्म व्याख्या	=)
९ चूलणी पिता	-)	२७ सनाथ-अनाथ निर्णय	=)
१० जैनधर्म में मातृ-पितृ सेवा	-)	२८ सकडाल पुत्र की कथा	=)
११ परिचय [दयादान विचार]	≡)	२९ तीर्थंकर-चरित्र प्र० भा०	।)
१२ शालीभद्र चरित्र ३ भाग	।≡)	३० ,, द्वि० भा०	।=)
१३ मिलके वस्त्र और जैन धर्म	-)	३१ सत्यमूर्ति हरिश्चन्द्रतारा	॥)
१४ जिनरिख जिनपाल	)॥।	३२ रुक्मिणी विवाह	।)
१५ मेघकुमार	।-)	३३ खादी और जैनधर्म	-)
१६ सामाइक और धर्मोपकरण	-)	३४ स्मृति श्लोक	।-)
१७ नमिराज ऋषि	भेंट	३५ जैनधर्मशिक्षावली भा.७ वां	।=)
१८ तेरापंथसे सुजानगढ़ में चरचा	)॥	३६ चित्रमय अनुकम्पा विचार	१॥)

हिन्दी की प्रायः सभी प्रसिद्ध प्रसिद्ध प्रकाशकों की पुस्तकें उचित मूल्य पर जीवन कार्यालय अजमेर में, सदैव मिल सकेंगी।

महावीर स्तोत्र अर्थ सहित	।-)	हंसराजचरित्र	-) बच्छराज चरित्र-)
क्षणकार चरित्र	=)	अमर चरित्र	-)॥ जैन सुख चैन बहार पाँचो भाग ॥।)
चन्दन बाला चरित्र	-)॥	गजल गुल चमन बहार	-)
चन्द्र लीला चरित्र	-)।	सीता बनवास	-) विनय वाटिका-)॥
चंपकचरित्र	-)।	राजाविक्रमादित्य	-)॥ स्त्री शिक्षा भजन संग्रह)॥।
प्रद्युम्न कुंवर चरित्र	-)॥	वीर जयन्ती संदेश	-)